जिनविजयजी मुनि अभिनन्दन ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९१२०३३)

मुख्य टाइटल

समिति की ओर से

सम्पादकीय

प्रास्ताविक

प्रथम खंड – जीवन परिचय

आचार्य श्री जिनविजय मुनि–संक्षिप्त परिचय – श्री जवाहीरलाल जैन ---------- १

राजस्थान को मुनिजी की देन – श्री गोपालनारायण बहुरा ---------- १४

वास्तव में वे देवकल्प हैं – पं. श्री झाबरमल शर्मा ---------- २२

द्वितीय खंड – प्रशस्ति

आचार्य जिनविजयजी – पं. सुखलालजी सिंघवी ---------- १

परिपूर्ति – पं. सुखलालजी सिंघवी ---------- ७

आचार्य जिनविजयजी – डॉ. रसिकलाल छोटेलाल परिख---------- ११

मुनिजीनां बे एक स्मरणो – श्री जयंतीलाल आचार्य ---------- १४

प्रेरणामूर्ति आचार्य जिनविजयजी – श्री दलसुखभाई ---------- १६

मुनिश्री जिनविजयजी की कहानी उनके स्वलिखित पत्रों की जबानी – श्री हजारीमल बाँठिया ---------- १९

मनीषी कर्म योगी – श्री हरिभाऊ उपाध्याय ---------- ३५

मुनिश्री जिनविजयजी – श्री भगवतसिंह महेता ---------- ३८

तृतीय खण्ड – लेख संग्रह

Religious background of Kuvalayamala – Dr. A. N. Upadhye----------1

What were the contents of the Drstivada – L. Alsford ----------7

Religious Condition in S. E. Rajasthan from early Inscriptions Dr. Adris Banerjee ------- 11

Parasaka the fifth varna – P. V. Bapat ---------- 20

जहाँगीर नो विधर्मी पवित्र पुरुषो प्रत्येनो आदर – डॉ. छोटुभाई आर. नायक ----------२१

समाधि पूर्वक मरण – श्री जुगल किशोर मुख्तार ---------- ३०

कबीर और मरण तत्व – डॉ. कन्हैयालाल सहल ---------- ३५

जैन धर्म और उसके सिद्धान्त – श्री देवेन्द्रकुमार शास्त्री ---------- ४०

Kautilya on war – R. P. Kangle ---------- 50

महाराजाधिराज श्री दुर्लभराज के समय का राष्ट्रीय संग्रहलाय दिल्ली का वि. सं. १०६७ का दान पत्र – डॉ. दशरथ शर्मा ---------- ५८

एक राजस्थानी लोक कथा का विश्लेषणात्मक अध्ययन – डॉ. मनोहर शर्मा ---------- ६२

बगड़ के लोक साहित्य की झांखी – डॉ. एल. डी.जोशी ---------- ६९

विद्यापति-एक भक्त कवि – डॉ. हरीश ---------- ९१

महाकवि धनपाल-व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन ---------- १०५

गुजरात में रचित कतिपय दिगम्बर जैन ग्रंथ – डॉ. भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा ---------- ११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन आगम-औपपातिक सूत्र का सांस्कृतिक अध्ययन – श्री अगरचन्द नाहटा ----------१२१
Study of Titthogaliya – Shree Dalsukh Malvania ---------- 128
राजस्थान भाषा पुरातत्व – डॉ. उदयसिंह भटनागर ---------- १३९
निमाड़ी भाषा और उसका क्षेत्र विस्तार – श्री रामनारायण उपाध्याय ---------- १७४
Jain Iconography a brief survey – Shree Umakant P Shah---------- 184
An Introduction to the Iconography of the Jain Goddess Padmavati – Shree A K Bhattacharya---------- 219
The Temple of Mahavir at Ahar – Shree M A Dhaky ---------- 230
स्वयंभूकृत रिट्ठणेमिचरित्र मांथी पच्चीस देश्य शब्दो – डॉ. हरिवल्लभ भायाणी ---------- २३३
वितण्डा – श्री एस्तेरे. ए. सोलोमन ---------- २४०
भारतीय कला के मुख्य तत्व – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ---------- २४३
भारतीय मूर्ति कला में त्रिविक्रम – डॉ. ब्रजेन्द्रनाथ शर्मा ---------- २५२
भारतीय संस्कृति में वृजकला और उसके ऐतिहासिक तिथिक्रम का विचार – श्री रावत चतुर्भुज ---------- २६१
श्री गौडी पार्श्वनाथ तीर्थ – श्री भंवरलाल नाहटा ---------- २६३
भारतीय संगीत शास्त्र में मार्ग और देशी का विभाजन – डॉ. प्रेमलताजी ---------- २७६
पृथ्वीराज विजय-एक ऐतिहासिक महाकाव्य – डॉ. प्रभाकर शास्त्री ---------- २८७
संस्कृत की शतक परंपरा – डॉ. सत्यव्रत तृषित ---------- ३०८
महाकवि समय सुंदर और उनका छत्तीसी साहित्य – श्री सत्य नारायण स्वामी ---------- ३२५
जैन दर्शन का कर्म सिद्धान्त-जीवन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - प्रो. प्रेमसुमन जैन ---------- ३३९
सत्यमेव जयते नानृतम् – प्रो. म. अ. महेन्दले ---------- ३४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org